ब्रहमाण्ड, प्रकृति, ज्योतिष और मनुष्य

29 September, 2007.

प्रकृति और प्राणी और प्राणीमात्र में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य जाति जिसने विज्ञान और सासांरिक नियमो को बनाया और कभी कभी ईन्ही नियमो और व्यवहारिकता को ही हम सम्पुर्ण मान लेते हैं । तब शायद हम प्रकृति से बगावत करने के मूड में होते हैं । मैंने सफल लोगों को ऐसा भी कहते सुना हैं कि उनकी कड़ी मेहनत और लगन का ही फल हैं कि वे संसार में सफल हुऐ हैं । अब कड़ी मेहनत और लगन तो ऐक मजदूर में भी होती हैं परन्तु वे इतने सफल नही हो पाते हैं, क्यों ? शायद इसके उचित उत्तर हमारे पास नही होगें, दिल को बहलाने के लिये हम कह सकते हैं कि उनमें साधारण बुध दी हैं अथवा वे जल्दी ही सांसारिक सुखो की लालच में उलझ जाते हैं ईत्यादि । मैंने कई असफल लोगों को ये भी कहते सुना हैं कि जैसी ईश्वर की मर्जी, मैंने मेहनत और लगन तो बहुत दिखाई परन्तु सफल नही हो सका, हम मनुष्य सफलता का श्रेय तो ले लेते हैं परन्तु असफलता का दोष अक्सर प्रकृति के मत्थे मड़ देते हैं ।

दरअसल बात कुछ युं होती हैं कि हम प्रकृति के प्रभाव से जन्म लेते हैं । प्राकृतिक शक्तियो के बल से स्वंय में विशेषतायें पाते हैं परन्तु हमे चलना सामाजिक नियमो के अतंर्गत पड़ता हैं ताकि अव्यवस्था ना फैले और समाज बनता और चलता रहे । ये सामाजिक व्यवस्था हमारे पूर्वजो ने हमारे लिये बना रखी हैं । प्राकृतिक शक्तियां हमे ऐक विशेष कार्य के लिये आकर्षित करती हैं और हम उस दिशा में कार्य करते हैं । जैसे किसी व्यक्ति विशेष में व्यापार की विशेष योग्यता हैं तो वह व्यक्ति व्यापार की दिशा में कार्य करने की अपनी योग्यता का ईस्तेमाल व्यापारिक गतिविधियों में लगायेगा ।

अक्सर हम हाथ आकाश की ओर उठाकर कहते हैं, जैसी ईश्वर की मर्जी, हम मुॅह से ना भी कहें परन्तु जब भी प्रकृति के सामने हम लाचार होते हैं, तब भी हाथ उपर उठाने का मतलब ही ये होता हैं कि सब कुछ उस ईश्वर के हाथ हैं जो ना जाने कॅहा और किस लोक में बैठा हमारे प्रारब्ध को तय करता हैं ।

आकाश अथवा रहस्यमय अंतरिक्ष हमारे भूत, भविष्य का गवाह हैं, फिर वॅहा बैठा हमारा ईश्वर हो यॉ फिर करोड़ों अरबों तारें सितारें, ऐक नजर हम अंतरिक्ष पर डाले तो सबसे पहले हम इन तारों सितारेां को ही देखते हैं, मानो ईश्वर कह रहा हो कि पहले इनको समझो फिर मुझ तक पहुचना और जबसे इंसान ने इन तारों सितारों को देखा हैं तबसे ही वो इनके आकर्षण से छूट नही पाया उसका निरंतर ही ये प्रयास रहा हैं कि वो इनको पूर्णरूप से जानले ताकि वो अपने ईश्वर से मिल सके आखिर ये तारें सितारे भी तो उसी रहस्यमय परम पुज्य शक्ति का निर्माणकार्य हैं जिसे हम ईश्वर कहते हैं ।

कुछ आधुनिकता से काम ले तो वैज्ञानिक कहते हैं, करोड़ो वर्ष पहले ऐक उल्का अथवा ऐक ग्रहिका के पृथ्वी से टकरा जाने से भीमकाय डायनासोरों का समूल नाश हो गया । विज्ञान की बदौलत आज हम जानतें हैं कि उल्काऐं, ग्रहिकाऐं और टूटे तारें अगर पृथ्वी से टकरा जायें तो भंयकर तबाही फैला सकते हैं । पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते ही भंयकर आग की लपटों में तब्दिल हो जाने वाली ये उल्काऐं, उस समय के जीव अथवा प्राणी में आकाशीय भय उत्पन्न करती होगी और जब यही उल्काऐं अथवा ग्रहिकाऐं पृथ्वी से टकराकर परमाणु विस्फोट जैसी व्यापक तबाही उत्पन्न करती होगी तों मृत्यु का ताडंव होता होगा और जिवित बचें प्राणी आकाश की ओर ताकतें हुऐ शायद रहम और जीवन के लिये प्राथना करते होगें । डायनासोरों की समाप्ती के बाद और हमारे शास्त्रों के मुताबिक वामन अवतार के बाद शायद विकसित होते इसांन ने भी ये देखा होगा । तभी से इंसान भय और जिज्ञासा से आकाश की तरफ देखता रहा होगा और अपने अनिश्चित भविष्य के लिये वो अक्सर उपर हाथ उठाकर उसकी कृपा का अभिलाषी रहा होगा ।

जैसे जैसे इसांन विकसित होता गया उसकी जिज्ञासा इन तारों और सितारो के प्रति बढ़ती रही होगी, कभी भय के कारण तो कभी इनके रहस्य को जानने के लिये ताकि वो अपनी सुरक्षा के प्रति आशान्वित हो सकें । आखिर उल्काऐं, ग्रहिकाऐं और टूटे तारें व्यापक तबाही का कारण ही बनते होगें । शायद इसके बाद ही तारो सितारों की खोज आरंभ हुई होगी और नतिजतन असख्यं तारों सितारों में से हमारी आकाशगंगा और सूर्य परिवार की खोज हुई होगी । हमारें वेदों, पुराणों में और शास्त्रों में इसका विस्तृत प्रमाण मिलता हैं । हम ये गर्व से कह सकते हैं कि हमारे ऋषि मुनि ही पहले सम्पूर्ण वैज्ञानिक थे जिन्होने ग्रहों और तारों की खोजें की और हमें उनके लाभ से परिचित करवाया । पता नही कैसे सिमित साधनों से उन्होने ये कमाल कर दिखाया जो आज भी हमारे लिये मार्गदर्शन का कार्य कर रहा हैं । शायद योगबल और तपस्या से उन्होने ऐसा किया हो और फलस्वरूप ज्योतिष शास्त्र का निर्माण हुआ ।

आधुनिक विज्ञान कुछ भी कहे, परन्तु जो कुछ वेदोंमें, पुराणोंमें और शास्त्रों में हैं वही सब कुछ प्रमाणित करते रहना आधुनिक विज्ञान का कार्य रह गया हैं । जैसे वैज्ञानिक कहते हैं सूर्य के आसापास सब ग्रह और पृथ्वी चक्कर लगाते हैं, अब इसे अभी अभी डेढ़ सौ वर्ष पहले सिध्द किया गया जबकि हमारे ऋषि मुनि इसे हजारों वर्ष पहले सिध्द कर चुके हैं । जैसे वैज्ञानिक कहते हैं कि जीव की उत्पति सबसे पहले जल में हुई और फिर जीव का पदार्पण ठोस भूमि पर हुआ । हमारे ऋषि मुनि कहते हैं सबसे पहले मतस्य अवतार हुआ, अब मतस्य अर्थात मछली पानी में ही उत्पन्न हो सकती हैं । अब पानी से मनुष्य का लगाव तो सब जानते हैं, जब तक दिन भर में ऐक बार हम नही नही लेते हैं हमे चैन नही मिलता । इसके अलावा भी हम पानी से दिन भर जुड़े रहते हैं । कई तरह से हम पानी का ईस्तेमाल करते हैं । ये इस बात का सबूत हैं कि हमारा पानी से विशेष संबंध हैं । हम ऐसा भी कह सकते हैं कि हम मूल रूप से पानी से उत्पन्न जीवो के वशंज हैं । ऋषि मुनि कहते हैं कि इसके बाद कूर्म अवतार हुआ अर्थात कछुआ । कौन नही जानता कि कछुआ पानी में भी रह सकता हैं और ठोस भूमि पर भी चल सकता हैं । ये वो युग रहा होगा जब जीव पानी से निकलकर ठोस भूमि पर जीवन यापन करना चाहता होगा और कभी वो पानी में रहा होगा और कभी ठोस भूमि पर, इस परह उसने भूमि पर रहना सीखा होगा । अब हजारों वर्ष पहले अति

ब्रहमाण्ड, प्रकृति, ज्योतिष और मनुष्य

29 September, 2007.

आधुनिक बात कहने का येही तरिका रहा होगा कि हर बात को भगवान के अवतार के रूप में कहा जाये ताकि विकसित होते इसांन की श्रध्दा और जिज्ञासा इसमें बनी रहे ।

इसके बाद वैज्ञानिक कहते हैं कि ठोस भूमि पर पर्दापण के बाद जीव में गतिशीलता उत्पन्न हुई और वो विकसित होने की दिशा में अग्रसर हुआ हमारे ऋषि मुनि कहते हैं कि वाराह अवतार हुआ, यही समय डायनासोरों का होना संभव हैं, वाराह अर्थात शुकर अथवा सुअर का अवतार, शक्ति और गति का मिलन । शक्ति इतनी की डायनासोर बनने लगे और गति ऐसी कि पानी से निकल निकल कर नित नये जीव ठोस भूमि पर पनपने लगे । सन्तुलन बिगड़ने लगा और प्रकृति को दखल देना पड़ा होगा और ऐक भंयकर उल्का भूमि से आ टकराई और डायनासोरो का समूल नाश गया । यॅहा ऋषियों का स्पष्ट संकेत हैं कि अभी इसांन का विकास होना आरंभ नही हुआ था, जीव तो गतिशील हो गया परन्तु इसांन बनने में अभी देर थी, गंदगी का भक्षण करने वाला सुअर अर्थात वाराह इसांन का प्रतिक नही हो सकता, शायद इसलिये वाराह का अवतार कहा गया ।

फिर हुआ नरसिंह अवतार अर्थात हिंसक समय का आरंभ जब जीव ने भूख के कारण मास भक्षण आरंभ किया होगा और इसके लिये उसने हिंसक बनना स्वीकार किया होगा । उल्का के भूमि से टकराने के बाद परमाणु विस्फोट जैसी भंयकर आग में उजाड़ और पुर्ण रूपेण बियाबान जैसी भूमि पर हरियाली और पेड़पौधौ का अभाव रहा होगा । बहरहाल बच गये जीवों को पेट भरने की मशक्कत तो करनी ही थी और जब सहज खानपान उपलब्ध ा ना हो तो ऐसे में उसे मास भक्षी तो बनना ही था । इंसानी शरीर पर सिंह का मुख, ये स्पष्ट संकेत हैं कि बुध्दी नही हिंसा प्रमुख रही होगी इस समय के दौरान और इसके बाद ऋषि मुनि कहते हैं वामन अवतार हुआ, वामन अर्थात छोटा कद अर्थात अर्ध इसांन ।

वामन अवतार से ऋषिमुनियों का स्पष्ट संकेत हैं कि इसांन बनने की प्रक्रिया आरंभ हो गयी थी । शायद इसी समय का विश्लेषण करके डारविन ने कहा होगा कि इसांन पहले बदंर था । वामन अवतार जिसके विषय में बताया गया हैं कि तीन कदमो में उसने सम्पुर्ण ब्रमाण्ड को नाप लिया था । इसके द्वारा शायद हमारे ऋषि मुनि सुदुर भविष्य का संकेत कर चुके हैं । पहले कदम में उसने सम्पुर्ण धरती को माप लिया । आज हम मनुष्य सम्पुर्ण धरती के चप्पे चप्पे से वाकिफ हैं । अगर हम ध्यान दे और थोड़ी कल्पना करें तो उस वामन अवतार ने आज मनुष्य के रूप में सम्पुर्ण धरती को ही माप लिया है। अर्थात पहला कदम ले लिया गया हैं । अब मनुष्य अंतरिक्ष की तरफ आकर्षित हैं और सुदुर अंतरिक्ष में उसे जीव की तलाश हैं । अगर हम ध्यान दे तो पायेगें कि दूसरा कदम उठा लिया गया हैं और जब ये कदम कंहि रखा जायेगा तो अंतरिक्ष की तलाश समाप्त होगी । जब अंतरिक्ष की ये तलाश समाप्त होगी और सम्पुर्ण ब्रमाण्ड को नाप लिया जायेगा जिसमें शायद अभी हजारो वर्ष लग सकते हैं , परन्तु ध्यान देने की बात हैं कि उसके बाद क्या ? वो तीसरा कदम जो वामन ने राजा बली के सिर पर रखा था वो तीसरा कदम मनुष्य कंहा रखेगा ? वामन अवतार के साथ ही ऋषि मुनियों का सुदुर भविष्य का स्पष्ट सकेंत हैं कि अब आगे क्या होगा ?

वामन अवतार के रूप में विकसित होते अर्ध इसांन नें सम्पूर्ण इसांन का रूप लिया राम अवतार के रूप में और वो पुर्ण आधुनिक बना कृष्ण अवतार के रूप में, इसके अलावा भी कई अवतारों का जिक्र हैं वेदों और पुराणों में परन्तु वो शायद उपअवतार थे जिन्होनें इसांन की विकासयात्रा में आधुनिकता की यात्रा को सक्रिय रखा । जैसे बजरंगबली का अवतार, इससे ऋषि मुनियों का स्पष्ट संकेत हैं कि इसांन उड़ान भी भर सकता हैं, शायद योगबल के द्वारा ये सभंव हो सके बहरहाल वैज्ञानिकों ने इसे नाम दिया हैं सुपरमैन ।

इसमें कोई शक नही कि विज्ञान ने कई प्राकृतिक पहेलियों और अनकही बातों तथा अनसुलझे रहस्यों को नाम दिया हैं जो शायद पहले सभंव नही था । परन्तु ग्रह तारें और ब्रहमाण्ड के अधिकतम रहस्य हमारे ऋषि मुनि हमें बहुत पहले बता चुके हैं । ज्योतिष शास्त्र इसी माला में ऐक कड़ी हैं ।

ज्योतिष शास्त्र के विषय में लोग जितने जिज्ञासु होते हैं उतना ही ये विषय रहस्यमय और विशाल हैं । रहस्यमय इसलिये कि इसांनी जीवन के प्रत्येक रहस्य की इसमें जानकारी हैं और विशाल इतना कि सम्पूर्ण जीवन लगा देने के बाद भी इसका अध्ययन समाप्त नही हो पाता हैं । क्योंकि साधारण मति से अधिक गूढ़ विषय होने की वजह से अक्सर इसके विषय में लोग भ्रम में होते हैं । अक्सर लोग ऐसा कहते सुने गये हैं कि, " ज्योतिष शास्त्र क्या हैं ? " मैंने बचपन में ऐक कहानी सुनी थी कि समुन्द्र के अंदर ऐक छोटी मछली ऐक बड़ी मछली से पुछती हैं कि, " ये समुन्द्र क्या हैं ? मैंने इसके विषय में बहुत सुना हैं "। अब कोई बताये कि कोई इसके विषय में क्या कहें । खैर, अब बड़ी मछली कहती हैं, " समुन्द्र भगवान हैं, समुन्द्र हमारा मालिक हैं, समुन्द्र के बिगैर हम जी नही सकते, समुन्द्र का नाम आदर से लो, वगैरह वगैरह । जैसे हम मनुष्य ज्योतिष शास्त्र के विषय में बातें करते हैं । ज्योतिष शास्त्र चमत्कार हैं, ज्योतिष शास्त्र जादू हैं, ज्योतिष शास्त्र विद्या हैं, ज्योतिष शास्त्र भविष्य देखने का आईना हैं । इत्यादी इत्यादी । प्रश्न पुछने वाले समुन्द्र की छोटी मछली की तरह होते हैं और शायद उत्तर देने वाले बड़ी मछली की तरह होते हैं ।

बहरहाल इस सारे प्रकरण में ऐक बात तो तय हैं कि जैसे वो छोटी मछली समुन्द्र में रहकर समुन्द्र की बात करती हैं और उससे और उसके प्रभाव से अन्जान हैं वैसे ही हम मनुष्य भी ग्रहों के प्रभाव के समुन्द्र में रहते हैं और उसके प्रभाव से अन्जान रहते हैं । जैसे ये बात असंभव हैं कि मछली अगर समुन्द्र से बाहर निकले और समुन्द्र के सम्पुर्ण रूप को देख सके तो शायद उसे समुन्द्र और उसके प्रभाव का अहसास हो जाये परन्तु ये असभंव इसलिये हैं मछली समुन्द्र से बाहर आ नही सकती, क्योकि उसके प्राण निकल जायेगें फलस्वरूप सम्पुर्ण समुन्द्र को देख नही सकती और समुन्द्र उसके लिये रहस्य बन जाता हैं । यही हाल हमारा हैं, ग्रहों का प्रभाव सारी पृथ्वी पर पड़ता रहता हैं इसी से सारी पृथ्वी का जीवनचक्र चलता हैं । हमारा जन्म इसी के प्रभाव से होता हैं इसके बिगैर हम जी नही सकते ।

ब्रहमाण्ड, प्रकृति, ज्योतिष और मनुष्य

29 September, 2007.

बहरहाल जैसे जैसे इसांन प्रगती करने लगा उसकी चाह आकाश और इसके रहस्य के प्रति बढ़ती गई और नतिजतन उसने ग्रहों की तथा हमारी आकाशगंगा की खेाज की, इसांन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव की खेाज की अपनी तपस्या, ध्यान और योगबल के द्वारा उसने जाना कि सूर्य इसांन की बुनियादी बातों का कारक हैं, इसांन के बुनियादी ढॉचें को खड़ा करने में सूर्य का प्रभाव कार्य करता हैं और होता भी कैसे नही जो सूर्य सारे जगत के ढॉचें को खड़ा किये हुऐ हैं वो भला इसांनके ढॉचें को क्यों ना खड़ कर पाता । चन्द्र इसांन के मन और उसकी भावनाओं पर असर डालता हैं , मंगल इसांन की शक्ति और उसके साहस का निर्माण करता हैं, बुध इसांन की बुध्दी और उसके अहसास को बनाता हैं, गुरु इसांन के ज्ञान का प्रतिक हैं और उसके रचनात्मक बुध्दी का, शुक्र इसांन के जीवन का रस बनाता हैं अर्थात जीवनमें सुख और समृध्दि शुक्र के कारण हैं, शनी इसांन के जीवन का स्थायित्व हैं जो कुछ भी हैं उसमें स्थायित्व हो, यही शनी की भुमिका हैं, राहु केतु इसांन के जीवन में अतिरिक्त फलों के कारक हैं ।

सभी ग्रह अपना अपना प्रभाव इसांन पर डालते हैं तथा यही प्रभाव इसांन अपनी कुण्डली के द्वारा जानता हैं, और कुण्डली ही इसांन के जीवन का आईना होता हैं परन्तु जिनकी कुण्डली नही हैं अथवा जन्म समय का साधन नही हो पाया हैं ऐसे लोग कैसे जाने अपने विषय में ? इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुऐ इंसान ने सामुद्रिक शास्त्र की खेाज की और हस्त रेखा विज्ञान प्रकाश में आया । परन्तु यही पर बस नही हुई, अंको की खेाज के साथ ही, अंक ज्योतिष प्रकाश में आया, बहरहाल ग्रहों का प्रभाव सभी जगह स्पष्ट दिखाई दिया फिर वो सामुद्रिक शास्त्र हो यॉ फिर अंक ज्योतिष ।

सामुद्रिक शास्त्र में हस्त विज्ञान के द्वारा उंगलियों के पर्वतों पर ग्रहों का प्रभाव दर्शाया गया अथवा मेहसूस किया गया इसी तरह अंक ज्योतिष में प्रत्येक ग्रह कों प्रत्येक अंक का स्वामी दर्शाया गया अथवा मेहसूस किया गया ।

ग्रहों का प्रभाव किसी विशाल समुन्द्र की तरह हैं और हम इसकी मछलियों की तरह हैं जो इसके अन्दर रहती हैं तथा इसे मेहसूस कर सकती हैं परन्तु प्रत्यक्ष इसे देख नही सकती । इसांन का जिज्ञासू स्वभाव और हमारे ऋषि मुनियों का ज्ञान हमें और भी इस काबिल बनायेगा कि किसी दिन हम मनुष्य जाति की भलाई के लिये और भी गहरी और विशेष खोजें करने में सफल होगें ।